धूप का टुकड़ा

अलका प्रमोद

धूप का टुकड़ा

(कहानी संग्रह)

अलका प्रमोद

ऊर्जस्वी युवा प्रतिभा के प्रतीक
सीपिका एवं अभिषेक को

मुझे कुछ कहना है

मानव मन के संप्रेषण का सबसे प्रभावी और सरल माध्यम कहानी है, जो काल के फलक पर नित्य नए चित्र उकेरती रही है। आदि काल से नानी दादी द्वारा सुनाए गये कहानी—किस्से, निरंतर नए नए रूप रख कर, मन मस्तिष्क से ले कर पन्नों तक अपने पद चिन्ह छोड़ते हुए, आज इलेक्ट्रानिक माध्यम तक जा पहुंचे हैं। माध्यम कोई भी हो, पर कहानी सदा बच्चों से लेकर वृद्धों तक सभी की प्रिय रही है और क्यों न. हो? वह मानव मन का प्रतिबिम्ब ही तो है।

कहानी वह दर्पण है जिसके द्वारा, बहुत कुछ जो अंतर्मन की किसी परत में छिपा था और हम उसे पहचान नहीं पा रहे थे, उससे हमारा परिचय हो जाता है। प्रायः कहानी पढ़ कर पाठक ऐसा अनुभव करता है कि यह उसी का दर्द है और जब पात्र में वह स्वयं को ढूंढता है, तब कहानी, कहानी न हो कर जीवन का अभिलेख हो जाती है। प्रत्येक काल के समाज, इतिहास, मानव मन की गुत्थियों और रिश्तों की उलझी ग्रन्थियों को, कहानी प्रतिबिम्बित करती रही है, इसका स्वरूप, अभिव्यक्ति की प्रस्तुति, भाषा, माध्यम, भले ही बदला हो पर उसकी आत्मा अक्षुण्ण है।

आजकल प्रायः कहानी को आधुनिक, समांतर, सचेतन, स्त्री-विमर्श, दलित-विमर्श आदि में विभक्त करके उनकी श्रेणी निर्धारित की जाने लगी है, पर मेरी दृष्टि में कहानी किसी भी रूप में प्रस्तुत की गई हो, कथानक समाज के किसी भी वर्ग से सम्बद्ध हो, यदि पाठक के मन को स्पर्श करती है, यदि उसके साथ पाठक की आत्मीयता के तन्तु कहीं जुड़ते हैं, यदि वह पाठक को कुछ क्षण रुक कर सोचने को विवश करती है, तो कहानी अपने उद्देश्य में सफल है।

बदलाव प्रकृति का नियम है, जीवन में तकनीक के प्रादुर्भाव के साथ यह बदलाव भी गति पा गया है। आज समाज के मूल्य निरंतर अपना आस्तित्व बदल रहे हैं और इस बदलते परिवेश में, कहानी के विषय और रूप भी बदल रहे हैं, क्योंकि वह तो लेखक की मानस संतान है। लेखक जिस समाज में रहता है, जो अनुभव करता है, वही उसकी कहानी में प्रतिबिम्बित होता है। जब किसी क्षण कोई बयार मन को स्पर्श कर जाती है, कोई घटना मस्तिष्क पर दस्तक देती है, तो लेखनी हाथों में आने के लिए

मचल उठती है और हृदय के भाव किसी कहानी का आकार ग्रहण कर लेते हैं।

मेरी कहानियां भी कहीं न कहीं मन पर अंकित आसपास की घटनाओं के हस्ताक्षरों और कल्पना का समावेश हैं। जीवन की ऊंची नीची राह पर कभी रंग बिरंगे पुष्पों की वर्षा मन को खुशियों से भिगो जाती है, तो मन उन्हें बांटने के लिये पन्नों को रंग देता है, तो कभी मन पर शूल चुभने के दर्द से साक्षात्कार, कहानी में ढल जाता है। जब भी कहीं कोई विचार मेरे मन को उद्वेलित करता है, तो उद्‌गार कल्पना के रंगों में रंग कर कहानी का स्वरूप धारण करते हैं।

इससे पूर्व मेरा प्रथम कहानी संग्रह "सच क्या था" के लिये प्राप्त मेरे प्रिय पाठकों की सराहना और स्नेह का परिणाम है—यह दूसरा क़हानी संग्रह "धूप का टुकड़ा"।

इस संग्रह की कहानियों में मैंने मानव मन के विभिन्न चित्र उकेरने का प्रयास किया है। अधिकांश कहानियाँ विभिन्न प्रतिष्ठित एवं साहित्यिक पत्रिकाओं में स्थान पा चुकी हैं, जैसे 'माँ' कहानी दिल्ली प्रेस की अखिल भारतीय कहानी प्रतियोगिता में पुरस्कृत हो चुकी है तथा 'एक ही नाव पर सवार', 'सुखी कौन' और 'देर हो चुकी' भी दिल्ली प्रेस की पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुकी हैं। यह संग्रह प्रस्तुत है और अब सफलता की कसौटी पर निर्णय सुधी पाठकों को करना है। आशा है आपका स्नेह और उत्साहवर्धन मेरे लेखन के प्रवाह को निरंतर बनाये रखेगा।

इससे पूर्व कि इस संग्रह का पूरा श्रेय पाठक मुझे दें, मैं कहना चाहूंगी कि यह अधिकार मेरे पापा, श्री कृष्णेश्वर डींगर और मम्मी श्रीमती सन्तोष डींगर का है, जिन्होंने मुझे सदा राह दिखाई। बात अधूरी रह जाएगी यदि अपने लेखन को सदा प्रोत्साहित करने और सहयोग देने के लिये अपने जीवन सहचर श्री प्रमोद कुमार पाण्डेय को मैं धन्यवाद न दूं।

पुस्तक का आवरण प्रथम दृष्ट्या प्रभाव डालता है, जो स्थायी और महत्वपूर्ण होता है। अतः बहुमुखी प्रतिभा के धनी डाक्टर आलोक दीक्षित की मैं विशेष रूप से आभारी हूँ, जिन्होंने अपनी अति व्यस्त चिकित्सीय जीवनचर्या से समय निकाल कर इस संग्रह के मुखपृष्ठ को अलंकृत करने का महत्वपूर्ण दायित्व उठाया।

अनेक शुभ कामनाओं और आशाओं के साथ यह कथा संग्रह सुधी पाठकों को समर्पित—

अलका प्रमोद

अनुक्रम

1.	फिर से	...	9
2.	रस्साकशी	...	15
3.	ये मेरी लाइफ है	...	24
4.	वह आवाज़	...	34
5.	नई सुबह	...	38
6.	प्रायश्चित	...	45
7.	माँ	...	50
8.	सपनों की किर्चें	...	58
9.	एक ही नाव पर सवार	...	65
10.	अब और नहीं	...	70
11.	पगली	...	78
12.	सुखी कौन	...	84
13.	धूप का टुकड़ा	...	88
14.	क्षमादान	...	96
15.	देर हो चुकी	...	104

फिर से

मानवी ने आंखे खोली तो कुछ क्षण तो उसे समझ ही नहीं आया कि वह कहां है, उसने हिलने का प्रयास किया तो अपने पांव को किसी भारी सी वस्तु के नीचे दबा हुआ पाया, पांव निकालने चाहे तो एक दर्द की लहर सी सम्पूर्ण शरीर में दौड़ गई थी। विवश हो कर उसने दृष्टि घुमाई तो चारों ओर एक खंडहर जैसा था, जिसके ऊपर वह एक आधी झुकी छत के नीचे दबी हुई थी। मानवी ने मस्तिष्क पर बल डाला तो जो उसे याद आया उसने उसके होश उड़ा दिये। उसके समक्ष वह सम्पूर्ण जलजला किसी चल-चित्र के समान प्रत्यक्ष हो गया। वह प्रातः उठ कर रसोई घर में पानी गरम कर रही थी कि अचानक न जाने कहां से घुस आए पानी ने उसे इतनी आवेग से धक्का दिया कि वह सामने की दीवार से जा टकराई, जब तक वह इस आक्रमण के संदर्भ में कुछ सोचती समझती अथाह जल घर की खिड़की दरवाजों के आस्तित्व को अपने में समेटता हुआ छत की ऊँचाइयों को छूने लगा था। तब उसे अंतर और अतिशय का ध्यान आया, जो अभी शयन कक्ष में सो ही रहे थे, वह तुरंत उस कक्ष की ओर लपकी। उसके इस दुस्साहस से अपने मद में उफनते अथाह जल का अभिमान मानो आहत हो गया और क्रोध में उसने, दोबारा दोगुनी शक्ति से उछाल कर के ऐसा पटका कि वह सुध बुध ही खो बैठी और आज जब उसे सुध आई तो वह खंडहर पर पड़ी थी जहां छत के नाम पर खुला आकाश था और चारों ओर खड़ी शेष दीवारें किसी लुटी पिटी सी लड़की के समान सिर झुकाए अपने दर्द की कहानी कह रही थीं। मन व्यवस्थित हुआ तो वह अंतर और अतिशय के लिये व्यग्र हो उठी। संभवतः उसी चिन्ता से वह इतना बल पा सकी कि पोर पोर टीसते तन के बाद भी अपने